



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए तकनीक

*रोहित गोरा¹, सुनिल जाखड़², राहुल गोरा³ एवं दिनेश जाखड़⁴

¹महाराजा सूरजमल कृषि महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

²राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

³कृषि महाविद्यालय, बसेड़ी, धौलपुर, राजस्थान, भारत

⁴केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: rohitgora2005@gmail.com

गर्मियों में मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें। यह मृदा की जल धारण क्षमता बढ़ाने में सहायक है तथा कीड़े मकोड़े व बीमारियों का प्रकोप भी कम होता है।

मेड़-बन्दी:- वर्षा जल के संरक्षण एवं भू-क्षरण को रोकने हेतु खेत के चारों ओर ऊंची एवं मजबूत मेड़ बनावें ताकि खेत से पान बहकर बाहर न जा पावें। क्योंकि वर्षा जल के साथ वायुमण्डलीय नत्रजन घुला होने के कारण भूमि की उर्वरा क्षमता में वृद्धि होती है। इस प्रकार हम खेत का पानी खेत में रख सकते हैं।

फसल चक्र:- फसल चक्र में दलहनी फसलों का समावेश करें जैसे रबी में जिस खेत में गेहूँ/जौ बोया था वहां खरीफ मौसम में मूंग/ग्वार बोयें। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।

सन्तुलित उर्वरकों एवं खादों का प्रयोग करें। पौधों की बढ़वार हेतु 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

बीज:- प्रमाणित बीज का ही उपयोग करें। बीजों को बोने से पहले बीजोपचार अवश्य करें।

बीजों को सबसे पहले फफूंदनाशक, कीटनाशक इसके बाद राइजोबियम/पीएसबी कल्चर से उपचारित करके बुवाई करें।

बीजोपचार फसल को बीमारियों एवं कीटों से मुक्त रखने का एक सस्ता तरीका है।

जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशक:- अधिक से अधिक जैव उर्वरकों एवं जैव कीटनाशकों का उपयोग करें, क्योंकि इससे फसल की लागत में कमी आती है और पैदावार भी अच्छी होती है।

जिप्सम का अनुप्रयोग:- तिलहनी एवं दलहनी फसलों में अन्तिम जुताई के समय 250 से 300 किग्रा. जिप्सम प्रति हैक्टर अवश्य डालें। तेल वाली फसलों को सल्फर तत्व की अधिक आवश्यकता होती है तथा मूंगफली में सल्फर के साथ कैल्शियम की भी अधिक आवश्यकता होती है जो जिप्सम द्वारा पूर्ति किया जा सकता है।

पंक्तियों में बुवाई:- फसल को पंक्तियों में बुवाई करें। पौधों से पौधों व पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी निश्चित करने व प्रति यूनिट उपयुक्त पौधों की संख्या रखने के लिए फसल को पंक्तियों में बुवाई करें।

निराई – गुड़ाई:- फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए समय – समय पर निराई – गुड़ाई अवश्य करें। क्योंकि खरपतवार फसल के साथ प्रकाश, स्थान, पोषक तत्व एवं पानी के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। जिससे पैदावार कम होती है।

जीवन रक्षक सिंचाई:- जब फसल को पानी की आवश्यकता हो उस समय सिंचाई अवश्य करें। एक जीवन रक्षक सिंचाई से हम 20 से 30 प्रतिशत तक पैदावार बढ़ा सकते हैं।

फसल अवशेष:- फसल अवशेषों को जलाये नहीं बल्कि इनको मिट्टी पलटने वाले हल से मिट्टी में मिलावें। या कम्पोस्ट पिट में डालकर कम्पोस्ट बनाने की प्रक्रिया करें। यह भूमि में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाते हैं जो पैदावार बढ़ाने में सहायक है।

फव्वारा सिंचाई:- पानी की कमी वाले क्षेत्रों में फव्वारा/बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति अपनावें।

कम पानी चाहने वाली फसलों का चयन करें:- राजस्थान में पानी की बहुत कमी है अतः कम पानी में चाहने वाली फसले जैसे – मोठ, बाजरा, ग्वार, मूंग, चना, सरसों का चयन करना चाहिए।

कम समय में पकने वाली किस्मों का चयन करें:- कम समय में अधिक पैदावार देने वाली किस्मों का चयन करना चाहिए।

मिश्रित खेती को अपनाए एवं स्थायी आमदनी प्राप्त करने के लिए फसल के साथ – साथ सब्जी उत्पादन, बागवानी, पशुपालन, सुअर पालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन आदि को अपनावें। ताकि किसानों को निश्चित आय मिलती रहे।

अन्तर सस्यन:- अन्तर सस्यन बीमा का कार्य करती है अगर एक फसल नष्ट हो जाये तो दूसरी फसल से कुछ आमदनी प्राप्त हो जाती है। तथा किसानों को किसी न किसी रूप में आमदनी प्राप्त होती रहती है।

पाटा लगाना:- जुताई के बाद खेत में पाटा अवश्य लगाये। यह नमी संरक्षण का कार्य करता है। या कुंड के पीछे 4.5 किग्रा. वजन का रबर व्हील को चलाये ताकि अंकुरण भी अच्छा हो व नमी का संरक्षण किया जा सके।

वायु अवरोधक:- उत्तर – पश्चिम दिशा में पेड़/झाड़ियां लगाये ताकि गर्म/ठण्डी हवाओं से फसल को बचाया जा सके।

मल्लिचंग (पलवार) का प्रयोग करें तथा भूमि में नमी का संरक्षण करें ताकि फसल लम्बे समय तक सूखा सहन करने की क्षमता रहे तथा भूमि से वाष्पीकरण को भी रोका जा सकता है।

समय-समय पर कृषि विभाग से जानकारीयां लेते रहना चाहिए

- ✓ फसल बीमा अवश्य रूप से करवाना चाहिए
- ✓ समेकित प्राकृतिक जैविक खेती को अपनाएं
- ✓ अपने उत्पाद को अच्छी तरीके से ग्रेडिंग व पैकिंग करके मंडी में ले जाएं
- ✓ बाजार की मांग के आधार पर ही फसलों का चुनाव करें
- ✓ फसल चक्र अवश्य रूप से अपनाना चाहिए
- ✓ जब भी कोई भी फसल लगाई जाए तो उसके साथ में मिश्रित फसल लगानी चाहिए
- ✓ सही मात्रा में खाद व बीज का उपयोग करना चाहिए